गोपाल राजू की पुस्तक 'तंत्र के सरल उपाय' का संक्षिप्त सार-संक्षेप

पीपल वृक्ष में समाया है दिव्य गुणों का भण्डार

Gopal Raju

पीपल का वृक्ष अपने में विलक्षणता लिए है। यह विशेषता ऐसे ही नहीं है। स्कन्द पुराण में अश्वत्थ अर्थात् पीपल को साक्षात् देवतुल्य माना गया है वृक्ष की जड़ में ब्रह्मा, तने में विष्णु और पत्ती में शिव का वास माना गया है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश त्रिदेवों का साक्षात् रूप है पीपल वृक्ष। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि समस्त वृक्षों में मैं पीपल का वृक्ष हूँ। श्रीमद्भागवत् के अनुसार द्वापर युग में परमधाम जाने से पूर्व योगेश्वर श्री कृष्ण अश्वत्थ के नीचे ही ध्यान में लीन हुए थे। बोधि वृक्ष के नीचे ही साधनारत भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त

हुआ था। धर्म ग्रन्थों में पीपल को शिव का वास माना गया हैं। हवन यज्ञ आदि में प्रयुक्त उपमृत, पात्र, दूर्वी, स्त्रुआ आदि पीपल काष्ट से ही निर्मित होते हैं। समिधाओं के रूप में वृक्ष का सूखा काष्ट विशेष प्रयोजनों में प्रयोग किया जाता है। इसके नीचे पूजा, जप, तप, साधना करना विशेष फलदायी सिद्ध होता हैं। अथर्ववेद, उपवेद आदि के अनुसार पीपल को औषधीय गुणों का भण्डार माना गया है। अनेक असाध्य रोगों में पीपल वृक्ष घटकों से औषधियाँ तैयार की जाती है। पर्यावरण की शुद्धता के लिए पर्यावरणविदों ने वृक्ष को अमृत तुल्य और जीवन दायनी माना है। अन्य वृक्ष जबकि रात्रि काल में दूषित गैस विसर्जित करते हैं वही यह वृक्ष चौबीसों घण्टे विशुद्ध जीवन दायनी ऑक्सीज़न देता है।

ज्योतिष शास्त्र में पीपल को गुरु अर्थात् वृहस्पति ग्रह का कारक कहा गया है। इसलिए गुरु ग्रह की जन्मपत्री में स्थिति कष्टकारी होने पर वृक्ष की पूजा, सेवा, अर्चना आदि करने का विधान है। स्त्रियाँ विवाह, वैवाहिक और संतान सुख की कामना से वृक्ष को देवतुल्य मान कर

उसकी पूजा करती हैं। शनि ग्रह के प्रकोप को शांत करने के लिए आटे के दीपक में सरसों के तेल को जलाने का विधान सदियों से चलन में है। पितृ दोष की शांति के लिए वृक्ष में जल से सिंचन करने का विधान है।

तंत्र जगत में पीपल के वृक्ष को विशेष स्थान प्राप्त है। पाठकों के लाभार्थ कुछ सरल से उपाय दे रहा हूँ।

1. होलिका दहन से पूर्व किसी सघन पीपल के वृक्ष की ग्यारह बार उल्टी परिक्रमा करते हुए उस पर कच्चा सूत लपेटते जाएँ। अन्त में सरसों के तेल को आटे के दीपक में जलाकर वृक्ष के नीचे छोड़कर निःशब्द घर लौट आएँ। दहन के समय अग्नि की ग्यारह परिक्रमा कर लें, किसी भी जन्म के दुष्कर्मों के प्रायश्चित का यह अच्छा उपक्रम सिद्ध होगा।
2. प्रत्येक शनिवार को पीपल का एक अखण्डित पत्ता अपनी पूजा अथवा पैसे रखने में रख दें। अगले शनिवारों में यह नए पत्ते से बदल दिया करें, धनलाभ होने लगेगा।
3. पीपल की सूखी हुई लकड़ियों से हवन करने पर अनेक

कष्टों का निवारण होता है।

4. मंगल और शनिवार को पीपल के पत्ते राम लिखकर उस पर मिष्ठान का नैवेद्य अर्पित करें और हनुमान जी को अर्पित कर दिया करें, आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।

5. कच्चे सूत को हल्दी में रंग लें। इसको सघन पीपल के वृक्ष के तने में लपेट दें, गुरु ग्रह जनित दोष शांत होंगे।

6. स्नान के बाद नित्य पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ाया करें, अतृप्त आत्माएँ शांत होगी।

7. लड़कियों की जन्मपत्री में यदि दुर्भाग्य योग हैं तो वह शुद्ध होकर वृक्ष के नीचे गोबर से लेपन करें, आटे के दीपक में गोघृत डालकर दीपक जलाएँ, सफेद कच्चे सूत से वृक्ष का बन्धन करें, वृक्ष की 108 परिक्रमा करते हुए मंत्र 'ऊँ श्री लक्ष्मी नारायणाय नमः' का जप करें।

8. श्मशान में लगे नल से छः दिन तक पीपल के वृक्ष में जल दे तो कर्ज से छुटकारा मिलने लगेगा।

9. वृक्ष के नीचे शिव प्रतिमा की स्थापना करें नित्य यथाभाव धूप, दीप, नैवेद्यादि से पूजन करके 'ऊँ नमः शिवाय' मंत्र का जाप किया करें, सुख शांति तथा धनादि

में वृद्धि होने लगेगी।

10. जन्मपत्री में शनिदोष के कारण कैसी भी पीड़ा हो रही है तो पीपल वृक्ष की पूजा करके उसके नीचे खड़े होकर एक माला 'ऊँ शं शानैश्चराय नमः' मंत्र जप लिया करें, कष्ट से छुटकारा मिलने लगेगा।

11. शनिवार तथा मंगलवार को हनुमत सहस्त्रनाम स्तोत्र अथवा हनुमान चालीसा जप करते हुए पीपल वृक्ष की प्रदक्षिणा किया करें समस्त कष्टों से मुक्ति मिलने लगेगी।

12. 'त्वमस्मिन् कार्य निर्वाहे प्रभावं हरिसत्तम तस्य चिन्तयतो यत्नो दुःख क्षय करो भवेत्' मंत्र जपते हुए आटे तथा तेल का एक दीपक नित्य पीपल के वृक्ष की जड़ में जला दिया करें, समस्त कष्टों का निवारण होगा।

Gopal Raju

मानसश्री गोपाल राजू
www.bestastrologer4u.com